P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रेमचंद के उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार का चित्र

अरुण कुमार साह
अतिथि अध्यापक
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
खान्द्रा महाविद्यालय,
खान्द्रा

सारांश

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के अमर कथाकार है, इनके उपन्यासो में जीवन एंव समाज के वहुआयामों के चित्र मिलते है। परन्तु इन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्ति एंव परिवार विशेषकर मध्यवर्गीय परिवार का सुन्दर चित्रण एंव वर्णन किया है। पारिवारिक परिस्थितियाँ, समस्यायें, उसकी प्रवृतियों का चित्र हमें इनके उपन्यासों में मिलते है, ये मानव चरित्र के चित्र को ही उपन्यास मानते है। इस संबंध में प्रसिद्ध आलोचक डा. लक्ष्मी सागर वार्णेय लिखते है – '' प्रेमचंद के साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात यह एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलता है कि ये परिवार को जो व्यविलोद्वारा निर्मित होता है, जीवद का केन्द्र–विन्दु से निरन्तर प्रसार की ओर उन्मुक्त होती है। उनका परिवार और व्यक्ति राष्ट्र सापेक्ष है।''

मुख्य शब्द : ग्रामीण समाज, सामाजिक कुरतियाँ, धार्मिक पाखण्ड, राजनीतिक समस्या, मध्यवर्गीय परिवार, एवं मध्यवर्गीय जीवन और समाज के विभिन्न वर्गो का चित्र।

प्रस्तावना

प्रेमचंद के प्रायः सभी प्रमुख उपन्यासों, गोदान, गबन, सेवासदन, कर्मभुमि, रंगभुमि, निर्मला आदि में मध्यवर्गीय परिवार के सुन्दर चित्र मिलते है। इनकी कहानियों में भी ये चित्र दिखलाई पड़ते है। इनके उपन्यास, कहानियों के प्रायः सभी नायक–नायिका, अन्य पात्र–पात्रा मध्यवर्गीय जीवन से ही आये है। इन्होंने इन पात्रों को मध्यवर्गीय समाज से उठाकर अपने साहित्य में प्रतिष्ठित किया है। चाहे वह 'गोदान' का होरी हो या धनियाँ, 'गवन' का रमानाथ हो या जालपा, 'कर्मभुमि' का अमरकांत हो या सुखदा, 'सेवासदन' की उमानाथ हो या गजाधर सभी पात्र मध्यवर्गीय समाज के है। इन्हीं पात्रों के चंरित्रों के चित्र हम इनके उपन्यसों में देख पाते है। इस संबंध में प्रसिद्ध कथाकार एवं आलोचक श्री अमृतलाल नागर लिखते है – ''प्रेमचंद की कहानी–उपन्यासों की नायक नायिका ठेठ जीवन से उठकर साहित्यों के सिंहासन पर प्रतिष्ठित किये गये है। साहित्य के नायक नायिकाओं की लम्बी विरासत वाले तख्ते ताउस पर होरी, धीसु, हल्कु, धनियाँ आदि प्रेमचंद के दम पर बेझिझक बड़ी शान से बैठे और जमाने का सिर श्रद्धा से उनके आगे नत हो गया।''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रेमचन्द के उपन्यासों की समस्याएँ व्यक्तिगत एवं पारिवारिक न होकर सामाजिक है। इन्होंने ग्रंमीण तथा नागरिक जीवन के अनेक पहलुओं पर मानवतावादी दृष्टिकोण से विचार व्यक्त किया है। इनकी कृतियाँ भारतीय सामाजिक चित्रण से ओतप्रोत है। ग्रंमीण समाज, सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक पाखण्ड, वेश्या समस्या, अछूत, समस्या, राजनीतिक समस्या, क्रान्ति का स्वरूप तथा समाज के विभिन्न वर्गो का चित्रण इनके उपन्यासों के विषय (वस्तु) कहे जा सकते है। इनके समस्त उपन्यासों की प्रधान विशेषताओं में एक यह भी है कि उनमें एक क्रमबद्य विकास रेखा दृष्टिगोचर होती है। इनके अधिकांश पात्र ऐसे हैं जो काल्पनिक जगत् के जाल से खिचकर यर्थाथ जगत की व्यवहारिकता की ओर बढ़ते प्रतीत होते है।

साहित्यवलोकन

प्रेमचंद के उपन्यासो में सबसे अधिक मध्यवर्गीय जीवन का परिचय 'गबन' उपन्यास में मिलता है। एक विद्वान इस संबंध में लिखते है – ''मध्यवर्गीय जीवन और मनोवृत्ति का जितना सफल चित्रण प्रेमचंद ने 'गबन' में किया है, उतना उनके साहित्य में अन्यत्र नही मिलता।'' 'गबन' उपन्यास का नायक रमानाथ, नायिका जलपा, देवीदीन रतना, मणिभूषण आदि पात्रों के माध्यम से लेखक ने मध्यवर्गीय परिवार का सुन्दर चित्र खींचा है। रमानाथ एवं जालपा के माध्यम से आभूषण प्रियता प्रसाधन सौन्दर्य, ऋण लेने की प्रवृति आदि गुणों

को दिखलाया है। मध्यवर्गीय परिवार में गहनो के रिवाज पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचंद लिखते है – ''गहनो का मर्ज इस गरीब देश में न जाने कैसे फैल गया।

जिन लोगो को भोजन का ठिकाना नहीं, वे भी गहनो के पीछे प्राण देते है।'' डा. सुषमा धवन ने 'गबन' में मध्यवर्गीय जीवन को स्वीकार करते हुए लिखा है – ''इसका (गबन का) धरातल पूर्ण तथा मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं तथा समस्याओं से सम्बद्ध है। कथा नायक रमानाथ किस प्रकार अपने वर्ण की सम्मान भावना एवं आडम्वर प्रियता के कारण अपना तथा अपनी पत्नी जालपा का जीवन दुखमय बना दिया है। इसका विशद चित्रण गबन में किया गया है।''

गोदान उपन्यास में लेखक ने नगर एवं ग्राम की दो कथाओ की दिखलाने का प्रयत्न किया है। इसके नायक होरी को यद्यपि राम विलास शर्मा अदि ने 'शोषित तथा उत्पीड़ित कृष्क' माना है परन्तु होरी महत्तो को कई विद्वानो ने मध्यवर्गीय किसान परिवार का प्रतिनिधि माना है। लेखक ने इस महाकाव्यात्मक उपन्यास में एक ओर होरी, धनियाँ, गोबर आदि पात्रो के द्वारा आज के मध्यवर्गीय किसान मजदुरो का जीवन दिखलाया है तो प्रो. मेहता, मालती आदि के द्वारा भी बुद्धि जीवियोंका प्रतिनिधित्व किया है। होरी के माध्यम से ग्राम्य परम्पराओं को दिखलाया है। प्रो. राजेस शर्मा लिखते है – ''होरी एक समुचा ग्राम्य केन्द्र जिसके आस–पास व्यवस्था के रूप में गांव की समस्त परम्पराओं, मिथ्या भावनाऐं, स्वार्थ परायणतायें और सरलतायें भी अनवरत घुमती है।'' 'गोदान' में होरी कहता है – ''..... खेती में जो मरजाद है वह नौकरी में तो नहीं है।'' धनियाँ व्यांग्यात्मक स्वर में कहती है – ''कोन मुँह लेकर मजदूरी करोगे महतो नही कहलाते।'' अतः होरी, धनियाँ में यहाँ मध्यवर्गीय किसान के गुण देखते है 'महतो की आकाक्षा'। डा. इन्द्रनाथ मदान ने इसलिए लिखा है – ''गोदान एक भारतीय किसान की जीवन गाथा है जिसमें उसकी सभी विशेषताऐं और सभी रूप विद्धमान है।'' अतः हम देखते है कि गोदान'' उपन्यास में भी मध्यवर्गीय जीवन चित्र दीखती है।

'सेवासदन' प्रेमचंद का एक प्रमुख उपन्यास है। इसमें प्रारम्भ में ही दारोगा कृष्णचंद एवं उसकी परिवार का मध्यवर्गीय जीवन दिखलाया गया है। कृष्णचंद की फिजुलखर्ची का वर्णन उपन्यासकार ने किया है – वह स्वंय तो शोकीन न थे, किन्तु अपने घरवालों को आराम देना अपना कर्तव्य समझते थे। घर में समान जमा करने की उन्हें धुन थी। सारा मकान, कुर्सियों, मेजो और आलमारियों से भरा हुआ था। ''उनकी पत्नी गंगाजली, पुत्री सुमन, सदन, गजाधर प्रसाद उमानाथ आदि पात्रों में मध्यवर्गीय पात्रों के गुण है।

'कर्मभूमि' उपन्यास में भी कथाकार ने अमरकांत, सुखदा, प्रो. शांति कुमार आदि पात्रों के द्वारा मध्यवर्गीय जीवन को प्रस्तुत किया गया है। अमरकांत सेठ समरकांत का पुत्र होकर भी मध्यवर्गीय जीवन व्यतीत करता है। आवश्यकता होने पर वह खादी बेचता है। हरिद्वार में गरीब मजदूरों का प्रतिनिधित्व करता है। वह कहता है – ''मुझे डिग्रियाँ इतनी प्यारी नही है कि उसके लिए ससुराल की रोटियाँ तोडू, अगर मैं अपने परिश्रम से धनोपार्जन करके पढ़ सकुंगा तो पढूंगा अन्यथा कोई धंधा करूंगा।'' उसकी पत्नी भी अमर जैसी हो सकती है – ''माता के साथ क्यो रहुँ ? मैं किसी की आश्रित नहीं रह सकती। मेरा दुख सुख तुम्हारे साथ है।'' प्रो. शांति कुमार भी धन, पद को त्याग कर सेवाश्रम की स्थापना करते है। वे एक मध्यवर्गीय जीवन–त्याग सेवा, जन कल्याण का जीवन बीताते है। सेठ समरकांत भी बाद में ऊँच वर्गीय सेठ से मध्यवर्गीय बन जाते है। अतः यहॉ कर्मभूमि के पात्रों में भी मध्यवर्गीय जीवन के चित्र है।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद के उक्त उपन्यासों – गबन, गोदान, सेवासदन, कर्मभूमी में हमें मध्यवर्गीय पात्रों के जीवन परिचय प्राप्त होते है। इसका कारण स्वंय प्रेमचंद का जीवन मध्यवर्गीय एवं अभावग्रस्त था। श्रीमती महादेवी वर्मा इस संबंध में लिखती है – '' उनका (प्रेमचंद का) जीवन अभाव अर्थ संकट के साथ–साथ स्नेह रहित कठिन परिवेश से आरंभ हुआ था। परन्तु उन प्रतिकुल परिस्थतियों में उनकी संवेदना को अधिक व्यापकता तथा मानव प्रेम को असीम गहराई दी।'' यही कारण था कि इन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय अभावग्रस्त जीवन चित्रों को दिखलाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिन्दी उपन्यास का इतिहासः– गोपाल राय*
2. *आधुनिकता और हिन्दी साहित्य :– इन्द्रनाथ मदान*
3. *हिन्दी साहित्य का इतिहास :– डा. हृदयेश मिश्र*